<u>संचार</u>

संचार हम सभी के लिए आवश्यक है और यह हमारे जीवन की धुरी है। वास्तविकता में यह हमारे जीवन को नया आयाम प्रदान करता है। इसलिए हमें संचार की अवधारणा को समझना आवश्यक है। संचार क्या है? हमारे जीवन में इसका क्या महत्व है? यह किस प्रकार कार्य करता है? संचार की प्रक्रिया में कौन से तत्व निहित हैं और इनका आपस में क्या संबंध है यह किस प्रकार संचार की प्रक्रिया को गति प्रदान करते हैं? संचार के विभिन्न प्रकार क्या हैं? इस प्रकार के प्रश्नों को ध्यान में रखकर इस अध्याय में संचार की प्रक्रिया को समझने के साथ ही इसमें प्रभावी संचार के उपकरणों पर भी चर्चा की गयी है।

स्वप्न देखना, किसी से वार्ता करना, किसी विषय पर चर्चा-परिचर्चा करना, भाषण करना, समाचार पत्र पढ़ना, फिल्म देखना, रेडियो सुनना आदि यह सब विविध प्रकार के संचार हैं जिनसे हम प्रतिदिन जुड़े रहते हैं। अर्थात हम अपने विचारों, भावनाओं की दूसरों से साझेदारी करते हैं और अपने कार्य को करते हुए निष्कर्ष तक पहुंचते हैं। अतः यह स्पष्ट है कि संचार हम में से प्रत्येक के व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण अंग है। संचार के अभाव में समाज का अस्तित्व संभव नहीं है।

संचार के माध्यम से मनुष्य के सामाजिक संबंध बनते और विकसित होते हैं। मानवीय समाज के संचालन की समस्त प्रक्रिया संचार पर आधारित है। संचार मनुष्य के अलावा पशु-पक्षियों में भी होता है। चिड़ियों का चहचहाना, सांप का फुफकारना, कुत्ते का भौंकना, शेर का दहाड़ना, गाय का रम्भाना यह सब संचार के ही उदाहरण हैं। जब किसी शिशु का जन्म होता है तो वह रोकर सभी को इस संसार में अपने आगमन की सूचना दे देता है।

'संचार एक शक्ति है जिसमें एक एकाकी सम्प्रेषण दूसरे व्यक्तियों को व्यवहार बदलने हेतु प्रेरित करता है।'

-हावलैंड

'वाणी, लेखन या संकेतों के द्वारा विचारों अभिमतों अथवा सूचना का विनिमय करना संचार कहलाता है।'

-रॉबर्ट एंडरसन

'संचार एक प्रक्रिया है जिसमें सामाजिक व्यवस्था के द्वारा सूचना, निर्णय और निर्देश दिए जाते हैं और यह एक मार्ग है जिसमें ज्ञान, विचारों और दृष्टिकोणों को निर्मित अथवा परिवर्तित किया जाता है।'

-लूमिक और बीगल

'यह एक प्रक्रिया है जिसमें दो या दो से अधिक व्यक्ति एक ऐसे रुप में विचारों, तथ्यों अनुभवों अथवा प्रभावों का विनिमय करते हैं जिससे प्रत्येक व्यक्ति संदेश का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर लेता है। वास्तव में यह संप्रेषण और संग्राहक के बीच किसी संदेश अथवा संदेशों की श्रृंखला को प्राप्त करने के लिए की गई सम्मिलित क्रिया है।'

-जे.पॉल लोगन्स

' संचार समानुभूति की प्रक्रिया श्रृंखला है जो कि एक संस्था के सदस्यों को ऊपर से नीचे तक और नीचे से ऊपर तक जोड़ती है।'

-मैगीनसन

' मानव-संचार को प्रतीकात्मक क्रिया द्वारा अर्थों के कार्य-व्यापार की सर्पित या कुंडलीदार प्रक्रिया के रुप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें लिखित, मौखिक एवं शब्द-रहित संदेशों को भेजने तथा प्राप्त करने से जुड़े सभी तत्त्व शमिल हैं।' -बोबी सोरेल्स पर्सिंग

MEDIA COMMUNICATIONS

विल्ब्र श्रेम ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है, 'ऐसी व्यवस्था जिसके माध्यम से मानवीय संबंध अस्तित्व में आते हैं तथा विकसित होते हैं।' विल्बर श्रेम के ही अनुसार, संचार उभयनिष्ठता के आधार पर अनुभवों की साझेदारी है।' अतः यह कहा जा सकता है कि किसी निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए विचारों, सूचना, ज्ञान, अनुभव, भावना की आपस में साझेदारी संचार है। यह साझेदारी चिन्हों, प्रतीकों के माध्यम से भी हो सकती है।

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि संचार की प्रक्रिया में दो या दो से अधिक व्यक्ति जुड़े हो सकते हैं। इनमें से एक सूचना को संप्रेषित करता है (संप्रेषक) दूसरा उस सूचना को प्राप्त करता है (प्राप्यक)। किस की साझेदारी की गयी - विचार अथवा सूचना (संदेश)। सूचना अथवा विचार की साझेदारी किसी चिन्ह या प्रतीक के माध्यम से भी संप्रेषित की जा सकती है, यह भाषा आधारित भी हो सकती हैं जिसका स्वरूप लिखित अथवा मौखिक सकता है। अपनी भाव-भंगिमा से भी हम अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति कर सकते हैं। यदि हम आमने-सामने की बातचीत नहीं कर रहे हैं तो हमें संदेश को प्राप्यक तक पहुंचाने के लिए किसी न किसी माध्यम की आवश्यकता होती है। जब हम विचारों अथवा सूचना का आदान-प्रदान करते है तो हम एक दूसरे के साथ संबंध स्थापित करते हैं जिसके द्वारा हम अपने उन उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होते हैं जिनको हमने पूर्व में निर्धारित किया होता है।

संचार के कार्य

यह विदित है कि संचार के लिए एक संप्रेषक, प्राप्यक, संदेश और माध्यम की आवश्यकता होती है। यह भाषा आधारित भी हो सकता है जिसमें लिखित अथवा मौखिक प्रकार सम्मिलित हैं। गीत, नृत्य, पेंटिंग तथा विभिन्न प्रकार की गतिविधिया हो सकती हैं जिनके माध्यम से हम संचार की प्रक्रिया में सम्मिलित होते हैं यदि हमें इन सभी गतिविधियों जैसे कि किसी से वार्ता , लेखन, वाचन, श्रवण (सुनना) गायन, नृत्य, पेंटिंग आदि प्रकार की अभिव्यक्ति के माध्यम से एक माह के लिए प्रतिबंधित कर दिया जाए तो जीवन निरर्थक लगने लगेगा।

संचार मानवीय जीवन के लिए महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक है। कोई व्यक्ति, समूह अथवा समाज, संचार के अभाव में अस्तित्व में नहीं रह सकता। समाचार, विचार, तथ्यों-आंकड़ों अथवा सूचनाओं के अभाव में हमारे जीवन की क्या सार्थकता रहेगी? निश्चित रूप से हम सम्मुख आने वाली चुनौतियों से बचाव करने में असमर्थ रहेंगे तथा व्यापारिक और व्यवसायिक कार्य में अवसर की उपलब्धता और सफलता प्राप्त करने से भी वंचित रहंगे। संचार के माध्यम से हम सामाजिक और सामूहिक रूप से अधिक सक्षम और सफल बन सकते हैं तथा परिवार, समाज और राष्ट्र प्रगति के पथ पर आगे बढ़ सकता है।

संचार के कार्यों को समझने के लिए हम इसे दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं,

प्राथमिक कार्य: सूचित करना, शिक्षित करना, मनोरंजन करना।

द्वितीयक कार्य: चर्चा-परिचर्चा, सांस्कृतिक प्रचार, एकीकरण को प्रोत्साहन आदि। संचार के द्वारा सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर लोगों के मध्य आम सहमति, सृजनात्मकता, समझदारी का विकास होता है।

सूचित करना: मान लिजिए यदि हम कोविड-19 के इस दौर में कोरोना से बचाव की जानकारी वंचित रहते तो न केवल हमारी वरन् देश की स्थिति कैसी होती? जिस प्रकार से जनमाध्यमो के द्वारा कोरोना से बचाव की जानकारी समाचार पत्रों, टेलीविजन, रेडियो, मोबाइल के माध्यम से संप्रेषित की गयी उससे भारत में कोरोना के संक्रमण को नियंत्रित करने में सफलता प्राप्त हुयी। जिस प्रकार केन्द्र सरकार और स्वयं प्रधानमंत्री द्वारा जनमाध्यमों का प्रयोग किया गया उससे लोगों में कोरोना से बचाव के लिए जागरूकता उत्पन्न हुयी और मास्क तथा सेनेटाइजर के साथ अपनी अभिवादन के लिए हमने

MEDIA COMMUNICATIONS

अपनी संस्कृति 'नमस्ते' के महत्व को समझा। संचार के माध्यम से ही हमें विविध प्रकार की सूचनाएं जैसे कि अपराध, दुर्घटना, युद्ध, संकट की जानकारी प्राप्त होती है जिससे कि हमें बचाव के लिए तैयार हो सकते हैं।

शिक्षित करना: शिक्षित करना संचार के प्रमुख कार्यों में से एक है। संचार के माध्यम से सामाजिकता को प्रोत्साहन मिलता है। संचार लोगों के ज्ञान में वृद्धि करने के साथ ही उनमें विषेशज्ञता और दक्षता को विकसित करता है। लोगों में जागरूकता उत्पन्न करना तथा लागों को अवसर की प्राप्ति के लिए प्रेरित करने का कार्य भी संचार के द्वारा किया जाता है। पाठ्यक्रमों की उपलब्धता, संस्थानों की जानकारी, प्रवेश प्रक्रिया की सूचना आदि के संबध में विद्यार्थियों तक सूचना संचार के माध्यमों से पहुंचती है। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दे हों अथवा किसी भी विषय पर जागरूकता उत्पन्न करनी हो, संचार की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। आपदा के समय सचेत करना हो या विकास की मुख्यधारा से लोगों को जोड़ना हो सब संचार के द्वारा ही सम्भव होता है।

मनोरंजन करनाः थकान भरे जीवन में स्फूर्ति के लिए हमें आराम और मनोरंजन की आवश्यकता होती है। मनोरंजन से एक ओर तो हम तनाव से मुक्ति पा सकते हैं तो वहीं सीख लेकर जीवन में आगे भी बढ़ते हैं। लोक गीत, लोक नृत्य, नाटकों का मंचन पुराने समय में जहां मनोरंजन के साधन थे तो उन्हीं के द्वारा लोगों में जागरूकता और सीख उत्पन्न करने का भी प्रयास किया जाता था। आज के समय में फिल्म, टेलीविजन, रेडियो पर प्रसारित होने वाले विविध प्रकार के मनोरंजक कार्यक्रमों के साथ ही नवमाध्यम भी मनोरजंन के अनेक विकल्प प्रस्तुत कर रहे हैं। ये मनोरंजक कार्यक्रम लोगों में जागरूकता और चेतना का प्रसार करने में सकारात्मक भूमिका का निर्वहन करते हैं। यदि हम फिल्मों की बात करे तो फिल्में मनोरजंन के साथ-साथ सामाजिक जागरूकता और परिवर्तन की उत्प्रेरक कही जा सकती हैं। महाकाव्य हों या अन्य धार्मिक ग्रन्थ उनको जिस प्रकार से धारावाहिकों में पिरोकर दूरदर्शन ने प्रसारित किया वह अपने आप में अनुपम उदाहरण है। रामायण, महाभारत, ओम नमः शिवाय जैसे धारावाहिकों ने दर्शकों के बीच अमिट छाप छोड़ी। जिस तरह कॉमिक के माध्यम से टेलीविजन के पर्दे पर जय हनुमान और कृष्णा का प्रस्तुत किया गया उससे आज के नौनिहालों का अपनी धार्मिक और आध्यात्मिक धरोहर से जुड़ने का अवसर मिला। इस तरह हम समझ सकते हैं कि मनोरंजन के साथ हम अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकते हैं, जागरूक हो सकते हैं और समाज और राष्ट्र में चेतना का प्रसार हो सकता है।

चर्चा-परिचर्चाः जनमाध्यमों पर चर्चा-परिचर्चा के द्वारा लोगों को किसी भी विषय पर विभिन्न प्रकार के दृष्टिकोण की जानकारी प्राप्त होती है। जिससे कि आम सहमति के निमार्ण में सहायता मिलती है।

सांस्कृतिक प्रोत्साहनःसंस्कृति के प्रोत्साहन में संचार प्रभावी भूमिका का निर्वहन करता है। दक्षिण भारत में मनाये जाने वाले ओणम तथा पोंगल पर्व के विषय मे सम्पूर्ण भारत में जनमाध्यमों द्वारा ही जानकारी प्राप्त हुयी। इसी तरह हम कह सकते हैं कि गणेश उत्सव हो या जगन्नाथ पुरी की शोभा यात्रा जनमाध्यमों ने ही इसे पूरे भारत तक पहुंचाने का कार्य किया।

एकीकरण: संचार एकीकरण का महत्वपूर्ण उपकरण है। सूचना और ज्ञान के संप्रेषण से लोग एक दूसरे की संस्कृति, परम्पराओं से अवगत होते हैं तथा शनैः शनैः उन्हें आत्मसात भी करना आरंभ कर देते हैं। इससे एकीकरण को बढ़ावा मिलने के साथ ही लोगों में सौहार्द के वातावरण का निर्माण भी होता है।

संचार के तत्व और प्रक्रियाः

संचार एक गतिमान प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में उद्देश्य की प्राप्ति के लिये क्रिया और प्रतिक्रिया की एक श्रृखंला होती है। प्रक्रियात्मक दृष्टि से संचार की प्रक्रिया में अनेक चरण सम्मिलित होते हैं। जिनसे मिलकर संचार प्रक्रिया पूर्ण होती है। सामाजिक विकास के साथ-साथ संचार एवं उसके चरणों का विकास हुआ।

MEDIA COMMUNICATIONS

संचार प्रक्रिया में निम्नलिखित तत्व होते है:-

1. संप्रेषक/स्त्रोत
2. संदेश
3. संचार माध्यम
4. संकेतीकरण
5. संकेतवाचन
6. संदेश प्राप्तकर्त्ता/(संग्राहक)
7. प्रतिपुष्टि
8. बाधा

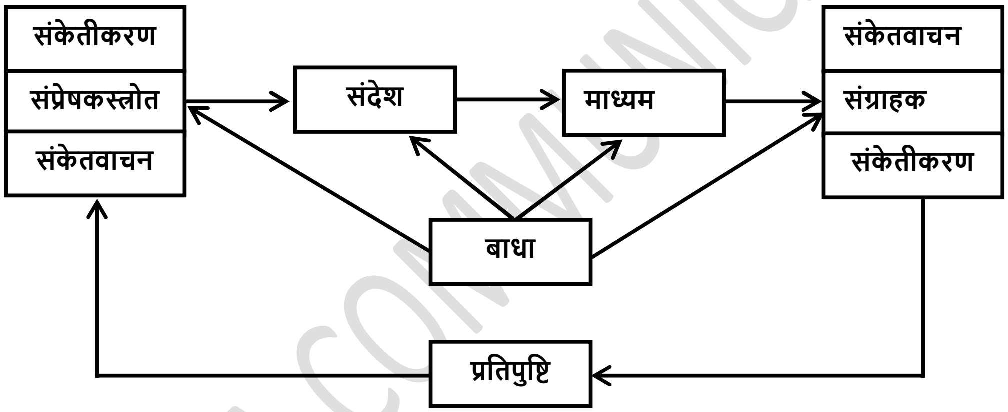

संप्रेषक/स्त्रोत

संचार-प्रक्रिया का यह बहुत महत्त्वपूर्ण तत्त्व होता है। संचार-प्रक्रिया को आरंभ करने वाले को संप्रेषक कहा जाता है। यह एक संपादक, रिपोर्टर, फिल्म निर्माता, शिक्षक, लेखक, वक्ता, विद्यार्थी या अन्य कोई भी व्यक्ति हो सकता है। यह विविध गुणों वाला होता है।

डेविड के. बर्लो ने संचारक (सम्प्रेषक) के चार गुण माने हैं-

1. संचार की निपुणता।
2. मनोवृत्ति।
3. ज्ञान का स्तर।
4. सामाजिक सांस्कृति आचरण।

सोचने की योग्यता, विचारों का शीघ्रता से समायोजन और प्रभावी अभिव्यक्ति अच्छे सम्प्रेषक के गुण होते हैं।

संकेतीकरण

सम्प्रेषक के मनः मस्तिष्क में संदेश निर्माण की प्रक्रिया को संकेतीकरण कहते हैं। सम्प्रेषक केवल संदेश का निर्माण ही नहीं करता बल्कि वह माध्यम को दृष्टिगत रखते हुए भी अपने संदेश को एक आकार देता है। क्योंकि यदि आमने-सामने का संचार हो तो संदेश अलग होता है लेकिन यदि संचार की प्रक्रिया के लिए किसी माध्यम की आवश्यकता होती है तो संदेश की रचना भिन्न प्रकार की होती है। किसी से मौखिक बात करते समय और पत्र व्यवहार के माध्यम से संचार करने में संदेश में भिन्नता होनी आवश्यक है। अपने लक्षित समूह तथा माध्यम की उपलब्धता और पहुंच के आधार पर संदेश की रचना सम्प्रेषक की सफलता का आधार बनती है।

संदेश

संप्रेषक अपने लक्षित समूह (पाठक, श्रोता, दर्शक) को मौखिक, लिखित, फोटो, पोस्टर, फिल्म, पेंटिग आदि के माध्यम से जो भी जानकारी सम्प्रेषित करता है वह संदेश कहलाता है। प्राप्यक तक अपनी बात को प्रभावी रूप से समझाने के लिए विशेष प्रकार की योग्यता, दक्षता की आवश्यकता होती है। सम्प्रेषक प्रभावी संदेश का निर्माण तभी कर सकता है जब उसमें अपने लक्षित समूह को जानने की समझ होगी और वह उसके अनुरूप ही संदेश निर्माण कर सकने की योग्यता रखता हो। संचार की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हम क्या कहते हैं और किस प्रकार कहते हैं। इसलिए अच्छा संदेश वही होता है जो कि संक्षिप्त होते हुए भी सारगर्भित हो। संदेश में सम्पूर्ण जानकारी समाहित होनी चाहिए।

संचार माध्यम

संचार माध्यम संप्रेषक और लक्षित समूह के बीच सेतु का काम करता है। यानी संदेश को जिस तकनीक से प्रेषक श्रोता तक पहुंचाता है वही तकनीक, माध्यम कहलाती है।
संचार के माध्यम: मौखिक, लिखित, भाषिक, अभाषिक।
जनसंचार के माध्यम समाचार पत्र, पत्रिकाएं, टेलीविजन, रेडियो, फिल्म, इंटरनेट आधारित माध्यम आदि। मार्शल, मैक्लूहान ने तो यहां तक कहा है कि 'माध्यम ही संदेश' है। माध्यम का चयन उनकी उपलब्धता और लक्षित समूह तक पहुंच और प्रयोग को दृष्टिगत् रखते हुए ही करना चाहिए। संचार की सफलता उचित माध्यम के चयन पर निर्भर करती है।

प्राप्यक

पाठक, श्रोता, दर्शक को ही संचार की भाषा में संग्राहक अथवा प्राप्यक या लक्षित समूह कहते है। संग्राहक को संदेश धैर्यपूर्वक सुनना या ग्रहण करना चाहिए। संदेश को सुनकर उसका अनुपालन करना चाहिए। प्राप्यक में संदेश को समझने की योग्यता होनी आवश्यक है। भावी संचार में प्राप्यक एक महत्वपूर्ण कड़ी होता है। संचार की प्रक्रिया के लिए प्राप्यक का होना आवश्यक है।

संकेतवाचन

संदेश को समझने की प्रक्रिया को संकेतवाचन कहते हैं। संकेतवाचन प्राप्यक की क्षमता पर निर्भर करता है। संदेश ग्रहण करने वाला संदेश को अपनी योग्यता के अनुसार समझता है, ग्रहण करता है। संचार की भाषा में इसे संकेतवाचन कहते हैं।

MEDIA COMMUNICATIONS

प्राप्यक अपनी शैक्षिक योग्यता, आयु, सामाजिक स्तर, आर्थिक स्तर, धर्म, लिंग, व्यवसाय, संस्कृति के आधार पर संदेश का संकेतवाचन करता है दूसरे शब्दों में कहें तो समझने का प्रयास करता है।

प्रतिपुष्टि

संचार-प्रक्रिया को सार्थक बनाने के लिए प्रतिपुष्टि बहुत आवश्यक है। प्रतिपुष्टि से ही यह पता चलता है कि श्रोता ने संदेश ग्रहण किया है या नहीं? दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि श्रोता की प्रतिक्रिया ही प्रतिपुष्टि है। सार्थक संचार में सदैव प्रतिपुष्टि की भूमिका प्रभावी होती है। प्रतिपुष्टि प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रुप में भी होती है। प्रत्यक्ष रूप की प्रतिपुष्टि में श्रोता स्वयं उत्तर देता है। जबकि परोक्ष प्रतिपुश्टि सर्वे, शोध माध्यम से प्राप्त की जा सकती है।

बाधा

जब संग्राहक को संदेश ग्रहण करने में असुविधा होती है तो उसे बाधा कहते है।
बाधा भाषागत, यांत्रिकी अथवा पर्यावरणीय हो सकती है।

संचार के प्रकार

मुख्यतः अभिव्यक्ति के आधार पर संचार को निम्नलिखित आधार पर वर्गीकृत कर सकते हैंः-

1- मौखिक संचार

2- सांकेतिक संचार

3- लिखित संचार

मौखिक संचारः मौखिक रूप से किए गए संचार को इस श्रेणी में रखते हैं।

सांकेतिक संचारः सांकेतिक संचार, संचार की वह प्रक्रिया जिसमें किसी विशेष संकेतों अथवा प्रतीको या देह भाषा, भाव-भंगिमा के द्वारा भावनाओं अथवा सूचना को प्रषित किया जाता है या संदेश को प्राप्तकर्ता तक पहुंचाया जाता है।

लिखित संचारः जब लिखित रुप में संदेशों का सम्प्रेषण किया जाता है तो उसे लिखित संचार कहतें हैं।

संचार के अन्य प्रकारः

1- वैयक्तिक संचार
2- अन्तर्वैक्तिक संचार
3- समूह संचार
4- जनसंचार

अन्तराव्यक्तिक संचार

संचार कि इस प्रक्रिया में व्यक्ति स्वयं से संचार करता है। जैसे ध्यान, प्रार्थना, किसी विषय के बारे में मौन बैठकर सोचना, आदि। इस संचार में किसी भाषा, संकेत अथवा प्रत्यक्ष रुप से किसी सम्प्रेषण की आवश्यकता नहीं होती। यह अन्तर्मुखी संचार होता है। संदेश प्रेषक एवं ग्रहणकर्ता वह स्वयं ही होता है। यह संचार अन्य प्रकार के संचार का आधार है क्योंकि किसी भी प्रकार के संदेश सम्प्रेषण से पूर्व व्यक्ति सर्वप्रथम अपने अंतः करण में संदेश निर्माण का कार्य करता है, मंथन करता है। यही मंथन संदेश निर्माण की प्रक्रिया है तथा अपने ज्ञान और कौशल के प्रकटीकरण की क्षमता भी। अतः अन्तराव्यैक्तिक संचार व्यक्तित्व के विकास का एक प्रमुख कारक भी है।

अन्तर्वैक्तिक संचार

संचार की इस प्रक्रिया में दो या दो से अधिक व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। जिसमें एक संदेश सम्प्रेषक होता है तथा अन्य संदेश प्राप्तकर्ता होते हैं। इनके मध्य शब्द, चित्र, संगीत आदि माध्यम से होने वाले विचारों, जानकारी, सूचना,

MEDIA COMMUNICATIONS

भावनाओं के आदान प्रदान को अन्तर्वैक्तिक संचार कहते हैं। इस प्रकार का संचार आमने-सामने भी हो सकता है और किसी तकनीकी का प्रयोग करते हुए दूर से भी हो सकता है। टेलीफोन, मोबाइल फोन, वीडियो कांफ्रेसिंग, आडियो कांफ्रेसिंग आदि तकनीकी के प्रयोग ने संचार क्रांति के इस युग में दूर बैठकर भी आमने-सामने के संचार जैसा वातावरण महसूस किया जा सकता है। कुछ विशेषज्ञ इसे यांत्रिकि आधारित अन्तर्वैयक्तिक संचार भी कहते हैं।

समूह संचार

जब सामूहिक रुप से किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए व्यक्तियों का समूह किसी स्थान पर एकत्र होकर विचार-विमर्श करता है तो इसे समूह संचार कहते है। विद्यार्थियों, कर्मचारियों, चिकित्सकों, व्यापारियो आदि विभिन्न वर्गों के समूह हो सकते है।

समूह संचार की विशिष्टताएं निम्नलिखित हैः-

1- समूह के सभी सदस्य एक-दूसरे से परिचित होते हैं।

2- समूह के मध्य सूचना के आदान-प्रदान में सुगमता रहती है।

3- समूह का गठन किसी उद्देश्य या लक्ष्य की प्राप्ति के लिए होता है।

4- समूह के सदस्यों के हित समान होते हैं।

5- समूह का प्रत्येक सदस्य संप्रेषक से प्रत्यक्ष या परीक्ष रुप से परिचित होता है।

जनसंचार

एक ही समय में बहुत बड़ी संख्या में लोगों तक अपनी बात पहुँचाना जंनसंचार कहलाता है। जब किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एक ही समय पर एक ही स्थान से किसी माध्यम के द्वारा बहुत बड़ी संख्या में लोगों तक किसी संदेश का सम्प्रेषण किया जाता है तो इस संचार को जन संचार कहते हैं। जैसे रेडियो, टीवी, फिल्म आदि इसके उदाहरण हैं। इसमें एक ही समय में विभिन्न स्थानों में सूचनाओं को प्रसारित किया जाता है। इस कारण जनता की प्रतिक्रिया को प्राप्त करना कठिन होता है। लेकिन जनसंचार एक सहज प्रवृत्ति है। राजनीति से लेकर किसी उपक्रम के प्रचार प्रसार के लिए इस संचार माध्यम का प्रयोग किया जाता है।

जनसंचार में जन अर्थात लोग एक ही स्थान पर न होकर भिन्न-भिन्न स्थानों पर होते हैं। ये अलग-अलग देशों के निवासी भी हो सकते हैं। आयु, शिक्षा, धर्म, राष्ट्रीयता, स्थानीयता, सामाजिकता, भाषा, संस्कृति-परम्परा आदि क्षेत्रों में विविधता भी हो सकती है। जनसंचार माध्यमों से प्रसारित होने वाले कार्यक्रम भारत में भी देखे जाते हैं और विदेशों में भी, इसी प्रकार विदेशी चैनलों से प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों को भारत में भी देखा जा सकता है। इतनी बड़ी संख्या में लोगों तक संदेश के सम्प्रेषण के लिए किसी न किसी माध्यम का होना आवश्यक होता है।

जनसंचार के माध्यम-

जनसंचार माध्यम संचारक और प्राप्यक के बीच सेतु का कार्य करते हैं। संम्प्रेषक को प्राप्यक से सम्पर्क करने के लिए जनमाध्यमों की आवश्यकता होती है। इसके लिए वह उचित जनमाध्यमों का प्रयोग करता है। वर्तमान में जनसंचार अनेक प्रकार जैसे मुद्रित माध्यम, इलैक्ट्रोनिक माध्यम तथा नव माध्यम सम्मिलित हैं। माध्यम के सही चुनाव पर संचार की सफलता निर्भर करती है। यह एक जटिल कार्य हो सकता है। क्योंकि संचारक को एक ऐसे माध्यम का चुनाव करना पड़ता है जो सर्वश्रेष्ठ हो और वह अपने संदेश को प्राप्यक तक आसानी से पहुंचा सके।

वर्तमान में जनसंचार माध्यमों को हम निम्नलिखित भागों में विभक्त कर सकते हैं-

(1) **प्रिंट माध्यम:** समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ और पुस्तकें, आदि।

(2) **इलेक्ट्रॉनिक माध्यम:** रेडियो, टेलीविजन, फिल्म आदि।

(3) **नवमाध्यम (इंटरनेट मीडिया):** सोशल मीडिया, वेब मीडिया, पोर्टल, ब्लॉग, डिजिटल मीडिया आदि।

MEDIA COMMUNICATIONS

परम्परागत जनसंचार माध्यम

प्राचीन काल में जनसंचार का माध्यम संगीत और नृत्य हुआ करते थे। संगीत परम्परा वैदिक काल से ही चली आ रही है। सामवेद संगीत का आदि-स्रोत माना जाता है। धार्मिक तथा सामाजिक अवसरों पर जनता में नृत्य की प्रथा प्रचलित थी। लोकनाटक तथा नौटंकी (उत्तर प्रदेश), जात्रा (बंगाल), मंच (मध्य प्रदेश), यक्षगण (कर्नाटक), थेरुकुटू (तमिलनाडु) आदि परम्परागत संचार के लोकनाटकों ने भारत में सामाजिक विषयों पर लोगों को गम्भीर विषयों पर जागरूक करने का काम किया और लोक -नाटककारों ने जनसंचार से इस माध्यम का भरपूर प्रयोग किया। इसी तरह भारत के प्रसिद्ध नृत्य जैसे कथक, कथकली, भरतनाट्यम, ओडिसी, मणिपुरी, कुचीपुड़ी तथा अन्य राज्यों के अनेक लोकनृत्य जनसंचार के लिए प्रयोग में लाये जाते रहे हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि संचार सभी मानवीय गतिविधियों का केन्द्र होने के साथ ही प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है। यह द्विपक्षीय और गतिमान प्रक्रिया है जिसमें विचारों, सूचनाओं, भावनाओ, ज्ञान और व्यवहार का आदान-प्रदान होता है।

जनसंचार न केवल स्थानीय, राष्ट्रीय स्तर के संचार को प्रोत्साहित करता है वरन् वैश्विक संचार में सहायक होता है। साथ ही यह देश के विकास में भी सकारात्मक भूमिका का निर्वहन करता है। इसके अतिरिक्त सूचना, मनोरंजन, खेल क्षेत्र आदि में भी इसकी भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

MEDIA COMMUNICATIONS